अध्याय-5 | आधुनिक विश्व में चरवाहे

Worksheet-1

बहुविकल्पी प्रश्न

1. दक्षिण केन्या और तंजानिया के पशुचारण चरवाहे किस समुदाय का प्रतिनिधित्व करते हैं?

(अ) बहू
(ब) बोरेन
(स) मसाई
(द) बर्बर

2. मसाई समाज कितने सामाजिक वर्गों में बंटा है?

(अ) 3
(ब) 5
(स) 2
(द) 4

3. गद्दी चरवाहे निम्न में से किस राज्य से सम्बंधित हैं?

(अ) राजस्थान
(ब) हिमाचल
(स) जम्मू-कश्मीर
(द) उत्तराखंड

4. मसाई चरागाह क्षेत्रों को किस आपदा का सामना करना पड़ता है?

(अ) सूखा
(ब) भूकंप
(स) बाढ़
(द) इनमें से कोई नहीं

5. तंजानिया में मसाई चलवासी चरवाहे कितनी संख्या में रहते हैं?

(अ) 250000
(ब) 100000
(स) 200000
(द) 150000

6. विश्व की लगभग कितनी चलवासी चरवाहों की संख्या अफ्रीका में निवास करती है?

(अ) 45 प्रतिशत
(ब) 25 प्रतिशत
(स) 50 प्रतिशत
(द) 35 प्रतिशत

7. चरवाहों के जीवन में औपनिवेशिक शासन के दौरान बहुत बदलाव आए। ये बदलाव क्या है/हैं?

(अ) उनकी चरागाहें सिकुड़ गई।
(ब) सभी
(स) उनके आवागमन को नियंत्रित किया गया था।
(द) उन्हें बढ़ा हुआ राजस्व देना पड़ता था।

8. वह फसल जो शरद और वसंत में बोई जाती है वह मार्च से मई तक काट ली जाती है।

(अ) इनमें से कोई नहीं
(ब) खरीफ
(स) रबी
(द) जायद

9. उत्तर प्रदेश, पंजाब, राजस्थान, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र व हरियाणा के ग्रामीण क्षेत्रों में घूमने वाले चरवाहे जो गाय व बैलों का व्यापार करते हैं?

(अ) गुजर
(ब) बंजारा
(स) गद्दी
(द) बक्करवाल

मिशन ज्ञान
पढ़ें: जब चाहें, जहाँ चाहें, जैसे चाहें!
100% FREE!
Video COURSES | QUIZ | PDF | TEST SERIES
Download Mission Gyan App

10. वह फसल जो मानसून के साथ बोई जाती है वह अक्टूबर से नवम्बर तक काट ली जाती है —

(अ) जायद
(ब) इनमें से कोई नहीं
(स) रबी
(द) खरीफ

रिक्त स्थान :

11. विश्व की लगभग ____________ चलवासी चरवाहों की संख्या अफ्रीका में निवास करती है।

12. धनगार चरवाहों के समुदाय ____________ राज्य से संबंधित हैं।

सत्य / असत्य

13. विश्व की लगभग 35 प्रतिशत चलवासी चरवाहों की संख्या अफ्रीका में निवास करती है।

14. गढ़वाल और कुमाऊँ के गिरी पादों में शुष्क वन क्षेत्रों को भाबर कहते हैं।

अति लघूत्तरात्मक प्रश्न

15. गुज्जर बकरवाल समुदाय किस राज्य से संबंधित है?

16. बुग्याल का क्या अर्थ है?

लघूत्तरात्मक प्रश्न

17. कुरूमा और कुरूबा समुदायों के जीवन का संक्षिप्त विवरण दीजिए।

18. वर्षा ने चरवाहा समुदायों को कैसे प्रभावित किया?

निबंधात्मक प्रश्न

19. औपनिवेशिक प्रतिबंधों ने चरवाहा समुदायों को किस प्रकार प्रभावित किया?

20. चरवाहा समुदायों को किन-किन समस्याओं का सामना करना पड़ता है?

HOTS

21. स्पष्ट कीजिए कि घुमंतू समुदायों को बार-बार एक जगह से दसरी जगह क्यों जाना पड़ता है? इस निरंतर आवागमन से पर्यावरण को क्या लाभ हैं?

मिशन ज्ञान
पढ़ें जब चाहें, जहाँ चाहें, जैसे चाहें!
100% FREE!
Video COURSES | QUIZ | PDF | TEST SERIES
Download Mission Gyan App

अध्याय-5 | आधुनिक विश्व में चरवाहे

Worksheet-1 उत्तरमाला

1. (स) दक्षिण केन्या और तंजानिया पशुचारण चरवाहे मसाई समुदाय का प्रतिनिधित्व करते हैं।
2. (स) मसाई समाज 2 वर्गों में बंटा हुआ है।
3. (ब) गद्दी चरवाहे ही हिमाचल प्रदेश से हैं बाकि अन्य राज्यों से हैं।
4. (अ) मसाई चरागाह क्षेत्रों में सूखे का सामना करना पड़ता है।
5. (द) तंजानिया में मसाई लगभग 1,50,000 हैं।
6. (स) विश्व की लगभग 50 प्रतिशत चरवाहों की संख्या अफ्रीका में निवास करती है।
7. (ब) सभी।
8. (स) वह फसल रबी कहलाती है।
9. (ब) इन प्रदेशों में घूमने वाले चरवाहे बंजारे कहलाते हैं।
10. (द) उस फसल को खरीफ कहते हैं।
11. **रिक्त स्थान :** 50 प्रतिशत
12. **रिक्त स्थान :** महाराष्ट्र
13. **सत्य / असत्य :** असत्य
14. **सत्य / असत्य :** सत्य
15. जम्मू-कश्मीर राज्य।
16. ऊँचे पहाड़ों में स्थित घास के मैदान बुग्याल कहलाते हैं।
17. **कुरूमा और कुरूबा समुदाय-** इन समुदायों के निवासी भेड़ और बकरियाँ मुख्य रूप से पालते हैं। इनसे प्राप्त होने वाले ऊन से ये लोग कंबल बनाते हैं और इन्हें स्थानीय बाजारों में बेचते हैं। ये अपने पशुओं की देखभाल के साथ-साथ कई दूसरे काम-धंधे भी करते हैं। सर्दियों में ये लोग तटीय क्षेत्रों की ओर प्रवास करते हैं तथा वर्षा ऋतु में ये पुनः पठारों के आतंरिक भागों की ओर लौट आते हैं।
18. **वर्षा का पठारी चरवाहा समुदायों पर प्रभाव-** पर्वतीय क्षेत्रों के विपरीत पठारी क्षेत्रों में रहने वाले चरवाहे बरसात और सूखे मौसम के अनुसार स्थानांतरण करते हैं। सूखे मौसम में पश्चिम तट पर अत्यधिक वर्षा होती है जिसके कारण तटीय क्षेत्रों में गीले दलदली हालात पैदा हो जाते हैं। यह मौसम भेड़-बकरी जैसे जीवों के अनुकूल नहीं होता है इसलिए पठारी क्षेत्रों में रहने वाले चरवाहे वर्षा ऋतु के अनुसार स्थान परिवर्तन करते हैं।
19. ब्रिटिश सरकार द्वारा चरवाहों के लिए बनाये गए। कानूनों के कारण उनकी जिंदगी पर बुरा प्रभाव पड़ा और इन्हे अनेक संकटों का सामना करना पड़ा।

    औपनिवेशिक प्रतिबंधों ने चरवाहा समुदायों को निम्न प्रकार प्रभावित किया—

    i. इससे चरागाह क्षेत्रों की कमी की समस्या उत्पन्न हो गई जिसके कारण चरवाहा समुदायों के सामने रोजी-रोटी का संकट उपस्थित हो गया।

    ii. वनों को आरक्षित कर दिया गया जिसके कारण अब वे वनों में पहले की तरह आजादी से अपने पशुओं को नहीं चरा सकते थे।

    iii. चरागाहों की कमी होने के कारण बचे हुए चरागाहों पर दबाव बहुत अधिक बढ़ गया जिससे चरागाहों की गुणवत्ता में कमी आई।

    iv. चारे की मात्रा और गुणवत्ता में कमी का प्रभाव पशुओं के स्वास्थ्य एवं संख्या पर भी पड़ा।
20. भारत के चरवाहों के जीवन में बदलाव के साथ-साथ अफ्रीकी चरवाहों की जिंदगी में भी औपनिवेशिक एवं उत्तर-औपनिवेशिक काल में चरवाहों के जीवन में अनेक बदलाव देखने को मिलें। चरवाहा समुदायों का जीवन बेहद कष्टपूर्ण होता है उन्हें निरंतर प्राकृतिक तथा मानवीय समस्याओं का सामना करना पड़ता है जैसे-

    i. दिशा का निर्धारण: प्रवास की दिशा निर्धारित करना चरवाहा समुदाय की एक प्रमुख समस्या होती है क्योंकि गलत दिशा का चयन उनके तथा उनके पशुओं के लिए भोजन तथा पानी की समस्या उपस्थित कर सकता है।

    ii. प्रवास की समय सीमा का निर्धारण: प्रवास काल में किस स्थान पर कितने समय तक रुकना है जिससे वे चारागाहों तक सही समय पर पहुँच सकें और मौसम बिगड़ने से पहले सही सलामत वापस आ सकें अर्थात

मिशन ज्ञान पढ़ें: जब चाहें, जहाँ चाहें, जैसे चाहें! 100% FREE! VIDEO COURSES | QUIZ | TEST SERIES Download Mission Gyan App

प्रवास की अवधि और रेवड़ के साथ कब और कहाँ ठहरना है आदि का निर्धारण भी एक कठिन समस्या होती है जिसे एक लंबे अनुभव द्वारा ही हल किया जा सकता है।

iii. **स्थायी संबंधों की स्थापना:** उन्हें अपने प्रवास के प्रत्येक ठिकाने पर रहने वाले निवासियों तथा अधिकारियों से घनिष्ठ संपर्क बनाए रखने की आवश्यकता होती है अन्यथा वे उन क्षेत्रों में उनके पशुचारण पर प्रतिबंध लगा सकते हैं। चरवाहा समुदाय अपनी अनेक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए गैर-चरवाहा समुदायों पर भी आश्रित होते हैं इसलिए आपसी मेल-मिलाप उनके जीवन का महत्त्वपूर्ण अंग होता है।

21. घुमंतू समुदाय या खानाबदोश वे लोग हैं जो एक स्थान पर टिक कर नहीं रहते अपितु अपनी आजीविका के लिए एक स्थान से दूसरे स्थान पर घूमते रहते हैं। हम जानते हैं कि उनका जीवन मुख्यतः उनके पशुओं पर आधारित है। क्योंकि पूरे वर्ष किसी क्षेत्र में पर्याप्त मात्रा में पानी और चारा उपलब्ध नहीं हो सकता था, इसलिए अपने पशुओं के लिए पानी और चारा खोजने के लिए उन्हें अपने पशुओं के साथ एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाना पड़ता था। जब तक एक स्थान पर चरागाह उपलब्ध रहती, तब तक वे उस स्थान पर रहते, इसके बाद वे नए क्षेत्र में चले जाते।

उनका निरंतर आवागमन निम्नलिखित कारणों से लाभदायक है:

i. उनके आवागमन के कारण प्राकृतिक वनस्पति को फिर से वृद्धि करने का अवसर प्राप्त होता है। फलतः वनस्पति संरक्षण के कारण पर्यावरण संतुलित रहता है।

ii. यह विभिन्न क्षेत्रों की चरागाहों के प्रभावशाली प्रयोग में सहायता करता है।

iii. यह खानाबदोश कबीलों को बहुत से काम जैसे कि खेती, व्यापार एवं पशुपालन करने का अवसर प्रदान करता है।

iv. उनके पशु मृदा को खाद उपलब्ध कराने में सहायता करते हैं।

मिशन ज्ञान
पढ़ें: जब चाहें, जहाँ चाहें, जैसे चाहें!
100% FREE!
Video COURSES | QUIZ | PDF | TEST SERIES
Download Mission Gyan App